RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-10
October-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

21वीं सदी: भूमंडलीकरण के दौर से गुजरता हुआ भारत

डॉ. प्रवीण दि. देशमुख

सहायक प्राध्यापक एवं हिन्दी विभाग–पमुख गुलाम नबी आजाद कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,बार्शिटाकली,जिला–अकोला (महा.)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 October 2018

Keywords
भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, औद्योगिकिकरण,बाजारीकरण,निजीकरण

***Corresponding Author**
Email: deshmukh.praveen44[at]gmail.com

ABSTRACT

आज का दौर 'भूमंडलीकरण' का दौर है। आज का दौर वैश्वीकरण,उदारीकरण,निजीकरण, बाजारीकरण का दौर है। आज हम देखते है कि औद्योगिकरण को अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है,साथ ही हम इस बात की ओर भी नजर अंदाज नहीं कर सकते कि खेती भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। इसके पीछे उद्देश समाज को सुखी एंव सम्पन्न कराना हो सकता है। किन्तु इसके कारण हमें कई कठिनाईयों से तथा समस्याओं से भी गुजरना पड़ता है। इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। इस वैश्वीकरण के इस युग में बनावटी तथा दिखावे को अधिक महत्व मिल रहा है,जिससे चिजों की मौलिकता को खतरा दिखाई दे रहा है। ऐसा होना नहीं चाहिए। क्योंकि किसी भी वस्तु की मौलिकता उसके लिए महत्वपूर्ण होती है। अगर हम उसकी मौलिकता को ही नष्ट करते है तो फिर उसमें केवल दिखावा ही रह जाता है। आज हमारे समक्ष मूलतः औद्योगिकिकरण,बाजारीकरण,निजीकरण के इस युग में भी अपने अस्तित्व को बरकरार रखना एक अग्निपरीक्षा से कम नहीं है। आज हम वैज्ञानिक तथा तकनिकि क्षेत्र के कारण विकास के पथ पर अग्रसर दिखायी दे रहें है। किन्तु इसी समाज का एक प्रमुख हिस्सा जो आज भी जिस युग में हम अपने आप को आधुनिकिकरण का एक प्रमुख हिस्सा मान बैठे है,ऐसे युग में किसान आज भी परिस्थिति,हालात से तंग आकर खुदखुशी,आत्महत्या करता नजर आ रहा है। जब तक हम इसके तह तक जाकर उस गहराई को नहीं समझेंगे तबतक हमारा आधुनिकिकरण कहना या समझना सही नहीं होगा। व्यवस्था के साथ–साथ गरीब–से–गरीब व्यक्ति भी इसका हिस्सा होना अनिवार्य है,इस विकास में क्रयशील होना आवश्यक है।

प्रस्तावना

आज हम देखते है कि पूरी दुनिया में 'बाजारवाद' (Globlization) की धूम मची हुयी दिखायी देती है। 'उदारीकरण,निजीकरण और भूमंडलीकरण' यह तीनों बाजारवाद के उपकरण है। केवल यही जोर–शोर सुनायी पड़ता है कि भारत का भूमंडलीकरण हो रहा है,या इससे आगे निकलकर देखे तो यह भी सुनाई पड़ता है कि भारत भूमंड़लीकरण का हिस्सा बन चुका है। और इसके पीछे कारण जोड़ दिया जाता है कि भारत को विश्व में विकसित तथा महाशक्ति बनने के लिए अनिवार्य है। मुझे इस सन्दर्भ में 'मुन्शी प्रेमचंद' जी के यह विचार सटिक एंव विशेष उल्लेखनीय दिखायी पड़ते है। इस सन्दर्भ में प्रेमचंद जी कहते है कि, ''बिल्ली बख्शे, मुर्गा लंडूरा ही रहेंगा। जिनके पास न खाने को अन्न है और न पहनने को वस्त्र, वह ब्राडकास्टिंग सुनकर अपना मनोरंजन न करेंगे तो कौन करेगा? व्यापार चलाने की कितनी बढ़िया नीति है। यह व्यापारी मानवी प्रकृति की दुर्बलताओं को खुब समझते हैं और खुब अपना मतलब गाठते हैं। मनोविज्ञान उनकी व्यवसाय–बुध्दि का मुख्य साधन है। कल्लोंच से कल्लोंच आदमी में भी आमोद–विनोद की प्रवृत्ति होती है। यह व्यवसायी उसी स्थल पर अपना निशाना लगाता है और शिकार मार लेता है।''1 प्रेमचंदजी के इस कथन में गहराई है। इस गहराई को अनदेखा कर हम विकास की बात करें तो वह केवल एक पागलपन ही होगा।

भूमंडलीकरण,निजीकरण,उदारीकरण

वास्तव में दुनिया भर के सम्पन्न वर्गों की बढ़ती एकजुटता और साझी समझ और रणनीति के अर्थ में वैश्वीकरण मजबूत होता जा रहा है। सबसे प्रमुख बात इसमें यह रही है कि इक्कीसवीं सदी में निगमित क्षेत्र के अंतर्गत दुनिया की आर्थिक,तकनीकी,व्यापारिक,सामाजिक,प्रबंधकीय शक्तियों का केन्द्रिकरण हो गया है,और यह प्रक्रिया निरंतर जारी है। इससे यह अर्थ तो अभिप्रेत हो जाता है कि प्रबल राष्ट्रवाद के लिए स्वदेशी अस्मिता को संस्थापित करने और आम आदमी को सशक्त बनाने के लिए विकास पथ पर अग्रसर निरंतर होना जरूरी है,और अनिवार्य भी। '' पूरी दुनिया एक हो। मनुष्य एक जाती है। भूमंड़ल के एक होने की आकांक्षा का सम्बन्ध मनुष्य के सांस्कृतिक महा–स्वप्न से है। पूरी वसुधा को कुटुम्ब मानने और बनाने का उदात्त भाव मनुष्य के अन्दर सदा से रहा है। इसी भाव के कारण आधुनिक समय में रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे महाकवि के साथ कई दार्शनिकों–चिन्तकों और लेखकों ने 'विश्व–मानववाद' और ' मानवधर्म' की संकल्पना को दुनिया के सामने रखा था। एक भिन्न अर्थ में देखें तो दुनिया के मजदूरों एक हो' अपने मूलार्थ अन्तर्ध्वनित करता है।''2

आज की यदि बात करें तो स्पष्ट दिखायी देता है कि आज लोग विकसित राष्ट्र और विश्वशक्ति की बात करते है',कुछ लोग स्वदेशी की भी चर्चा करते है। अब भूमंडलीकरण की चुनौती के रूप में विकास प्रक्रिया को एक गंतव्य दिया गया है और वह विकसित राष्ट्र बनने का। '' आज की विश्वव्यापी परिस्थितियों तथा भारत के ठोस यथार्थ के धरातल पर डब्ल्यूटीओं के नये वार्ता–क्रम का परिप्रेक्ष्य, आशय, सम्भावनाएँ, तुलनात्मक क्षमताएँ और जरूरत क्या हैं, ये विचारणीय विषय है। किसी भी आपसी बातचीत में वार्ताकारों की कुशलता और कौशल की एक भूमिका होती है। परन्तु ये व्यक्तिगत स्तर के हुनर और काबिलियत ठोस अन्तरर्राष्ट्रीय

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

आर्थिक–सामाजिक, रणनीतिक–कुटनीतिक तथा सैन्यशक्ति और अन्तरर्राष्ट्रीय समीकरणों के प्रभाव को बदल नहीं सकते हैं। मूलतः वे एक घाटे के सौदे की तात्कालिक चोट और चुभन को तथा दूरगामी खामियाजे को सहनीय बनाने में ही सफल होते है। परन्तु खाका बदल सकता है, जब क्यूबा,वियतनाम आदि की तरह राष्ट्रीय सम्प्रभुता, अस्मिता तथा स्पष्ट और घोषित नीतियों प्रतिबध्दताओं और रणनीतिक व्युव–रचनाओं का लचीला इस्तेमाल किया जाए।'' 3

'समता' मनुष्य की मूल प्रवृत्ति होती है,और इसे बरकरार रखना है। इस बात से 'बाजारवाद' अनजान नहीं, वह इस बात से भलि–भॉति परिचित होता है। बहुत ही स्वाभाविक है कि 'बाजारवाद' जनतंन्त्र की समताकांक्षी प्रवृत्ति में अपने अनिवार्य टकराव को जानता है।आज हमें मूलतः विकास को पूर्णतः की कसौटी पर उतारना हो तो उसके लिए हमें समग्र दृष्टिकोण से विचार करना होगा।'' इस 'सामुदायिक विकास' के लिए किये जानेवाले सामाजिक आन्दोंलनों को 'बाजारवाद' मूलतः राजनीतिक आन्दोंलनों के तोड़ने के रूप में उपयोगी मान रहा है। जरा ठहर कर शान्त मन से विचार करने पर यह समझते शायद देर न लगे कि विकास की सामुदायिक चेतना की वैधता का इस्तेमाल करने में गैर–सरकारी संगठनों(NGO) की भूमिका को 'बाजारवाद'किस नजरिये से देखता है।'' 4

हाल ही में विश्व में आर्थिक मंदी की समस्या उभर कर सामने आयी, जिससे कई विदेशों में काम कर रहें भारतीयों को अपने काम से हाथ धोना पड़ा। आज हम देखते है कि लगभग सभी क्षेत्र बाजारवाद, भूमंडलीकरण, निजीकरण के चपेट में जा चुके है। '' अजीब बात यह है कि जो अभिजन जनता की मॉगों के कारण राज्य के कमजोर होने का रोना रो रहे हैं, उन्हें उदारीकरण और भूमंडलीकरण की नीतियों के कारण हो रहे राज्य की ताकत के क्षय की कोई चिंता नहीं है। उन्हें अपनी ही जनता की मॉगों और दबावों से तो ज्यादा खतरा लगता है,लेकिन विदेशी कारपोरेशनों,विश्व बैंक और अंतरर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाओं, विश्व व्यापार संगठन,दुनिया–भर के आर्थिक और पश्चिमी यूरोप के व्यापारिक गठजोड़ों और तंत्रों की तरफ से भारतीय राज्य पर पड़ने वाले दबावों में उन्हें कोई जोखिम नहीं दिखायी देता।''5

एक तरफ भूमंडलीकरण ने उपभोग के एक नये, विमर्श,नए चिन्तन की ऑधी चला दी है। भूमंडलीकरण के नाम पर यदि विकृत तथा घातक एंव समाज के लिए नुकसानदेह चीजों का विरोध होना चाहिए। अनुकरण के नाम पर अन्धानुकरण नहीं होना चाहिए। ऑख मूँदकर किसी भी चीज को अपनाना केवल और केवल मुर्खता ही हो सकती है। केवल नवीनता के नाम पर स्वीकार्य कर लेना यह मुनासिब नहीं है। अनुकरण करते समय उसके गुणों के साथ उसके दुष्प्रभावों को नजरअंदाज करना मूर्खता से परे नहीं। हमारी सोच का दायरा विशाल समुदाय के बेहतर जीवन को ध्यान में रखकर होना चाहिए।'' नयी संचार प्रौद्योगिकी लोकतंत्र का हित साधन केवल तभी कर सकती है जब हम शुरुआत से ही भूमंड़लीय समाज की विकृत तस्वीर का विरोध करें,उस तस्वीर का जो बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा सूचना–महापथ पर लगातार धुऑधार रतार से हमारे लिए परोसी है।''6 हमें बाहर आकर ऐसी चीजों का विरोध तीव्रता से करना चाहिए जो हमारे लिए घातक सिदध हो। उसी के साथ हमें ऐसी चीजों का पुरस्कार भी करना चाहिए जो समाज के लिए एक संजीवनी का काम करें।

अभी इस गम्भीर खतरे से होने वाले नुकसान की भरपाई करने के तौर–तरिकों का पूरी तरह से निर्धारित हो पाया नहीं था कि आर्थिक स्तर पर भी नए–नए खतरे मॅड़राने लगे। जब हमारे देश के आर्थिक उदारीकरण,भूमंडलीकरण तथा मुक्त अर्थव्यवस्था का स्वीकार किया तो मीडिया के सारे समीकरण ही बदल गए। इस सन्दर्भ में गोहर राजा कहते हैं कि,'' भूमंडलीकरण की परियोजना के तहत जब देश को बाजार के रूप में देखा जाने लगा, तो मीडिया की भूमिका भी बदल गयी। वह भी गरीब जनता को भूलाकर उन्हीं लोगों पर ध्यान देने लगा, जो पैसे वाले हैं,उपभोक्ता हैं, एक बाजार है।''7

उदारीकरण के आर्थिक और सामाजिक प्रभावों के बारें में चर्चा लगातार चल रही है। आज देश की हालात ऐसे है कि शिक्षा सभी को मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार्य है। किन्तु स्थिति ऐसी बन गयी है कि गरीब से गरीब व्यक्ति भी अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी परवरिश तथा अच्छी से अच्छी शिक्षा देना चाहता है। आज संस्थाओं में शिक्षा शुल्क अधिक बढ़ जाने से असुविधा हो जाती है। इसलिए वह शिक्षा अपने बच्चों को नहीं दे पा रहे है। आधनिक युग में शिक्षा में क्षेत्र में जो असुविधाओं का दौर आया है जिससे सभी प्रभावित है। शिक्षा क्षेत्र में जो पारदर्शकता होनी चाहिए वह है या नहीं यह बड़ा सवाल है जो क्षिक्षा क्षेत्र से जूड़ा है।

आज हम कहते है कि आधुनिकिकरण हो गया। शिक्षा क्षेत्र का बाजारीकरण हो गया। हर क्षेत्र में विकास एंव उन्नति हो रही है, किन्तु ऐसे समय में भी इस देश का सबसे महत्वपूर्ण एंव अहम् हिस्सा किसान है। वही किसान आज परिस्थिति के हातों विवश होकर आत्महत्या कर रहा है। कितनी दूर्भाग्य की बात है। जो देश तीसरी महासत्ता तथा विश्व में एक नया मुकाम बनाता हुआ नजर आता है उसी देश का किसान परिस्थिति से,हालात से लड़कर मौत को गले लगाता हुआ दिखायी देता है। किसान बड़ी मुश्किल से फसल का निर्माण कर लेता है तो उसे उसका उचित मोल नहीं मिल पाता। कितने दुर्भाग्य की बात है खेतीप्रधान देश में किसान की यह दुर्गति। आर्थिक उदारीकरण की नीति के बाद देश में संगठित क्षेत्रों में रोजगार लगातार कम होते जा रहे है। इस यांत्रीकिकरण के युग में जहॉ जनसंख्या तो बढ़ती जा रही है, किन्तु उसकी तुलना में रोजगार की सम्भावनाऍ कम दियााायी दे रही है। इस चक्रव्यूह में देश का आम आदमी पीसता हुआ नजर आ रहा है।

वैज्ञानिक प्रगति के कारण 21 वीं सदी पूरी तरह से बदल चुकी है। जहॉ कुछ कमिया नजर आती है तो कुछ बदलाव भी दिखाई देते है जो देश के प्रगति में वृद्वि करते दिखाई देते है। वैश्वीकरण एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य के बीच आर्थिक,सामाजिक,सांस्कृतिक एंव राजकीय संदर्भ में राष्ट्रीय दायरे से ऊपर उठने की मानसिकता में वृध्दि कर रही है। '' बाजारीकरण के कारण भारतीय समाज में जो आर्थिक,सामाजिक और शैक्षिक विषमता थी उसका दायरा भी

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

विस्तृत बन गया है। आज हम कम्प्यूटर का प्रशिक्षण हिन्दी भाषा में ले सकते हैं। इंटरनेट पर ई–मेंल,चैटिंग,टेली कॉन्फ्रेन्स,वेब आदि में हिन्दी भाषा का प्रयोग कर सकते है।''8

वास्तव में भूमंडलीकरण का सर्वप्रमुख तथा सर्वव्यापक रूप आज के संसार के शक्ति–सन्तुलन का प्रतिबिम्ब है। फलतः इस भॅवर से उबरने का अर्थ है एक नया शक्ति–संतुलन। औद्योगिक विकास का पश्चिमी देशों की नकल का रास्ता भी राष्ट्रीय स्वावलम्बन, स्वाभिमान, आन्तरिक समण, समरसता–एकजुटता में बाधा डालता रहा। उसीप्रकार से हिन्दी के फैलाव के कारणों को भी भारतीय भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है। जैसे–'' सूचना–विस्फोट के इस युग में हर चीज तेजी से बदल रही है। क्या भाषा,क्या संस्कृति,क्या विचार,क्या फैशन? इसी कड़ी में आ जाता है मनोरंजन। विशेष रूप से टेलिविजन,वीडियों तथा इटंरनेट ने हमारी दुनिया में बदलाव ला दिया है। '' 9

श्री. विजयकुमार ने इन तथ्यों को समेटते हुए स्पष्ट किया है–'' आर्थिक भूमंडलीकरण की सांस्कृतिक प्रक्रिया को सबसे प्रमुख लक्षण यह दिखाई देता है कि उपभोग सामग्री के रूप में विश्व संस्कृति के प्रतीक सारे संसार पर हावी हो रहे हैं। स्थानीय और राष्ट्रीय संस्कृतियों का जनता के एक बड़े समुह के लिए बड़ा भावनात्मक अर्थ होता है,जबकि ग्लोबल संस्कृति(कल्चर) पर ऐसा कोई दबाव नहीं है। यह एक विश्रृंखलित,समयहीन,विजड़ित संस्कृति है जो किसी भी भौगोलिक संदर्भ के बाहर खड़ी है।''10

इन सबका प्रचार स्पष्ट रूप से आज खेल जगत,फैशन,श्रृंगार प्रसाधन, वास्तुशिल्प और विज्ञापन पर परिलक्षित होता दिखायी दे रहा है। भूमंडलीकरण सीधा बाजारवाद से जुड़ा हुआ है। वैश्वीकरण के माध्यम से कुछ हमें सुविधाएँ भी अधिक होती दिखायी देती है,जैसे कि अर्थव्यवस्था में नए–नए तंत्रज्ञान का समावेश होता है। तथा प्राप्त पूँजी का समान वितरण एंव उत्पादन क्षमता का ठीक इस्तेमाल वगैरे। वैश्वीकरण में आर्थिक तत्व को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। वैश्वीकरण के इस युग में मनुष्य,मनुष्य न रहते हुए एक पैसा निर्माण करनेवाली मशीन बन चुका है। जहॉ हम कहते है कि मनुष्य के लिए रूपये,पैसा बना हुआ है। रूपये पैसे को मनुष्य निर्माण करता है। किन्तु आज हालात बिल्कुल उसके विपरित दिखायी देते है। आज स्थिति ऐसी है कि रूपये–पैसे 'मनुष्य' का निर्माण कर रहा है। उनके आगे मनुष्य की अहमीयत कम हो गई है,और रूपये–पैसे की अहमीयत ज्यादा हो गयी। रुपये तय करता है मनुष्य का जीवन।

आज अधिकांशः नाते–रीश्ते भी रूपये पैसों के आधार पर तय होने लगे है। जहॉ आम आदमी आज अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु चिंता में दिखायी देता है। जहॉ आज भी देश में छोटी बच्चीयों से लेकर महिलाओं पर हो रहे अत्याचार। भ्रष्टाचार,घूस तथा अनैतिकता फैलती हुयी दिखायी देती है। आए दिन हो रहे महिलाओं पर अत्याचार,खुन,बढ़ते हुए अपराध,भ्रष्टाचार इनकी समय रहते यदि रोकथाम नहीं हुयी तथा किसान जो इस देश का एक अहम् एंव महत्वपूर्ण भाग है,उसकी मूलभूत समस्याओं सुलझाना आवश्यक है। युवा वर्ग जो आज बेरोजगारी की चपेट में जकड़ा हुआ दिखायी दे रहा है उसे इससे बाहर निकालना होगा। यदि ऐसा नहीं हो पाया तो आनेवाला भविष्य बड़ा कठिन अभिप्रेत है।

निष्कर्ष

आज के इस भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण एंव निजीकरण के युग में आर्थिक स्तर पर हम उॅचाईयों की सीढ़िया चढ़ते दिखायी दे रहे है। किन्तु दुख की बात यह है कि मानवीयता जैसे मूल्य को हम काफी पीछे छोड़ आए है। आज केवल नाटकीयता,बनावटीपन अधिक दिखायी देता है,किन्तु मौलिकता कही नजर नहीं आती। यदि हमें भविष्य में वैश्वीकरण की अंधी दौड़ से अपने आप को बचाना है तो निश्चित ही हमें इसके लाभ एंव हानियों के बारें में सोच–विचार,एंव चिन्तन–मनन करना ही होगा। केवल इसके पीछे भागने से बिना सोचे समझे या केवल स्वार्थ वृत्ति से दौड़ने से हमारा हीत नहीं होगा। इसकी मौलिकता पर हमें विशेष ध्यान देना होगा।

- हमें वैश्वीकरण के दौर में अपना अस्तित्व बनाएँ रखना है।
- परिवार एंव रीश्ते–नाते को बनाएँ रखना होगा।
- समाज में,परिवार में तनाव मुक्त वातावरण को जीवित रखना होगा।
- इस सुंदर प्रकृति को भूमंडलीकरण की चपेट से दूर रखना होगा।

अतः हम कह सकते है कि सारे विश्व को एक सा करने की प्रक्रिया वैश्वीकरण है। जहॉ मॅहगें मकानों और कारों के लिए सस्ते कर्ज दिए जाते हों। और किसानों को भारी सूद पर लिखे कर्ज न चुकाने पर आत्महत्या का रास्ता अपनाना पड़ता हो। ऐसे हालातों का बदलना ही विकास का रास्ता तय करेगा।

संदर्भग्रन्थ सूची

1.प्रफुल्ल कोलख्यान–बाजारवाद और जनतंत्र, आनंद प्रकाशन, 176/178 रवीन्द्र सरणी, कोलकत्ता, संस्करण–2006,पृ–13
2.वही,पृ–17
3.कमल नयन काबरा–भूमण्डलीकरण के भॅवर में भारत,प्रकाशन संस्थान,4715/21,दयानन्द मार्ग, दरियागंज,नयी दिल्ली,संस्करण–2008,पृ–21–22
4.प्रफुल्ल कोलख्यान–बाजारवाद और जनतंत्र, आनंद प्रकाशन, 176/178 रवीन्द्र सरणी, कोलकत्ता, संस्करण–2006,पृ–16
5.भारत का भूमंडलीकरण–संपादकः अभय कुमार दुबे,वाणी प्रकाशन प्रा.लि. 4697/5,21 ए,दरियागंज,नयी दिल्ली, संस्करण–2007,पृ–71
6.वही,पृ–161

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

7.डॉ.पंडित बन्ने–हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, अमन प्रकाशन,104ए/80सी, रामबाग, कानपुर, प्रकाशन –2012,पृ–91
8.महिपाल सिंह,देवेन्द्र मिश्र–विश्व बाजार में हिन्दी, ब्रह्म प्रकाशन,सी–5/एस–2,ईस्ट ज्योति नगर, दुर्गापुरी चौक,शाहदरा,दिल्ली,संस्करण–2010,पृ–45
9.वही,पृ–189
10.डॉ.माणिक मृगेश–भूमंडलीकरण,निजीकरण व हिन्दी, वाणी प्रकाशन प्रा.लि. 4697/5,21 ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण–2009
11.डॉ.राजकुमारी गडकर–इलेक्ट्रॉनिक माध्यम बनाम मुद्रित माध्यम,अन्नपूर्णा प्रकाशन,127/1100 डब्ल्यू वन, साकेत नगर,कानपुर,संस्करण–2014
12.सं.रामशरण जोशी– मीडिया और बाजारवाद, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड जी–17,जगतपुरी, दिल्ली,संस्करण–2004

© RRIJM 2015, All Rights Reserved